पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 7 हिंदी

अध्याय 4

जागरण गीत

प्रश्न बैंक

कक्षा 7 की कोई बोर्ड परीक्षा नहीं होती; यह प्रश्न बैंक पाठ्यपुस्तक और अध्याय के विषयों पर आधारित है

birlaeducation.org

बिरला एजुकेशन

अध्याय 4: जागरण गीत

रचयिता: सोहनलाल द्विवेदी

अध्याय का सार

कवि आलस्य और अकर्मण्यता की नींद में सोए लोगों को जगाने आया है। वह कल्पना के हवाई महल छोड़कर वास्तविक जीवन जीने, कर्त्तव्य पथ पर बढ़ने, शूल को फूल बनाने, मँझधार में पतवार लेकर पार उतरने और मन की संकीर्णताओं व श्रृंखलाओं को तोड़कर सागर की तरह विशाल और उदार बनने की प्रेरणा देता है।

भावार्थ

प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक, फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।

कवि कह रहा है कि वह लोगों को प्रगति की ओर ले जाने के लिए प्रस्तुत है। वह लोगों के मन में शक्ति और साहस का संचार कर रहा है और प्रेरित कर रहा है कि वे आलस्य और अकर्मण्यता छोड़कर कर्त्तव्य परायण बनें, कल्पना करना छोड़कर वास्तविक धरातल पर जिएँ, पथभ्रष्ट न बनें, सच्चे रास्ते का परित्याग न करें और मन में कभी हीन भावना न लाएँ। तभी वे जीवन में उन्नति करेंगे और प्रगति की ओर बढ़ेंगे।

कवि लोगों को आश्वस्त कर रहा है कि जिसे वे काँटा समझ रहे हैं, उसे वे फूल बनाने के लिए प्रस्तुत हैं। वे लोगों के दुःख को दूर कर उसे सुख के रूप में बदलना चाहते हैं। बड़ी बड़ी कल्पनाएँ करना ही सुख नहीं है। साहस के साथ कठिन से कठिन कर्त्तव्य का निर्वाह करना ही सच्चा सुख है। सच्चा सुख उत्तरदायित्व के निर्वाह में ही मिलता है।

लेखक/कवि परिचय

सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1905 में हुआ था। वे हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं और उनकी कविताओं में देश प्रेम, कर्म और जागरण की भावना मिलती है। इस कविता में उन्होंने आलस्य में सोए लोगों को जगाकर कर्मशील बनने की प्रेरणा दी है। नोट: कवि का यह परिचय समाधान साइट पर छपे पाठ्यपुस्तक अभ्यास पर आधारित है, भौतिक पुस्तक से सत्यापित नहीं हुआ है।

कठिन शब्द

शब्द	अर्थ

उदयाचल	पूर्व दिशा में स्थित वह पर्वत जहाँ से सूर्य उदित होता है
अस्ताचल	पश्चिम का कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य अस्त होता है
कल्पना	भावना, अनुमान
शूल	काँटा, दु:ख का प्रतीक
फूल	सुख का प्रतीक
मँझधार	नदी के बीच की धारा
पतवार	पार उतारने का साधन
श्रृंखलाएँ	बंधन, जंजीर
संकीर्णता	क्षुद्रता, ओछापन, तंगदिली
सिन्धु	सागर
विपथ	सच्चे रास्ते से भटकना
गुरु भार	बड़ा उत्तरदायित्व

birlaeducation.org

समूह A: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ), 12 प्रश्न

सही विकल्प को गहरे (बोल्ड) अक्षरों में दिखाया गया है।

1. 'जागरण गीत' कविता के कवि हैं पाठ्यपुस्तक

(क) माखनलाल चतुर्वेदी
(ख) महेश्वरी प्रसाद द्विवेदी
(ग) सोहनलाल द्विवेदी
(घ) हरिकृष्ण प्रेमी

उत्तर: (ग) सोहनलाल द्विवेदी।

---

2. कवि इस कविता के द्वारा कैसे लोगों को जगाने की बात कर रहा है? पाठ्यपुस्तक

(क) वास्तविक जीवन जीने वाले को
(ख) कल्पनात्मक जीवन जीने वालों को
(ग) कर्मशील जीवन वाले को
(घ) निराश जीवन वाले को

उत्तर: (ख) कल्पनात्मक जीवन जीने वालों को।

---

3. 'जागरण गीत' कविता का कवि लोगों को कहाँ नहीं जाने देगा? पाठ्यपुस्तक

(क) उदयाचल

(ख) अस्ताचल

(ग) विंध्याचल

(घ) अरुणांचल

उत्तर: (ख) अस्ताचल।

---

4. कवि ने किसको तोड़ने की बात की है? पाठ्यपुस्तक

(क) श्रृंखलाएँ, संकीर्णताएँ

(ख) संबंध

(ग) आवरण

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (क) श्रृंखलाएँ, संकीर्णताएँ।

---

5. 'सिंधु' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है? पाठ्यपुस्तक

(क) सागर

(ख) नदी

(ग) लहर

(घ) झरना

उत्तर: (क) सागर।

birlaeducation.org

---

6. कवि शूल को क्या बनाने आ रहे हैं? पाठ्यपुस्तक

(क) फूल

(ख) धूल

(ग) भूल

(घ) मूल

उत्तर: (क) फूल।

---

7. कविता में शूल तथा फूल किसका प्रतीक हैं? पाठ्यपुस्तक

(क) दुख सुख

(ख) हँसी खुशी

(ग) न्याय अन्याय

(घ) चल अचल

उत्तर: (क) दुख सुख।

---

8. 'शूल' शब्द का अर्थ क्या है? पाठ्यपुस्तक

(क) नदी

(ख) कवि

(ग) काँटा

(घ) फूल

उत्तर: (ग) काँटा।

---

9. कवि के अनुसार किसके उठने से धरती और आकाश का सिर उठेगा? पाठ्यपुस्तक

(क) जीवन

(ख) लोगों

(ग) कल्पना

(घ) धीरज

उत्तर: (ख) लोगों।

---

10. सोहनलाल द्विवेदी का जन्म कब हुआ था? पाठ्यपुस्तक

(क) सन् 1905

(ख) सन् 1910

(ग) सन् 1915

(घ) सन् 1900

birlaeducation.org

उत्तर: (क) सन् 1905।

---

11. मँझधार में कवि किसके सहारे लोगों को पार लगाने की बात करता है? अतिरिक्त

(क) पतवार

(ख) पाल

(ग) रस्सी

(घ) तैराकी

उत्तर: (क) पतवार।

---

12. कवि मन की संकीर्णताओं को तोड़कर कैसा बनने को कहता है? अतिरिक्त

(क) सागर की तरह विशाल और उदार

(ख) पर्वत की तरह अचल

(ग) नदी की तरह शांत

(घ) वृक्ष की तरह स्थिर

उत्तर: (क) सागर की तरह विशाल और उदार।

समूह B: रिक्त स्थान भरिए, 10 प्रश्न

1. 'सिन्धु' का अर्थ _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सागर

---

2. 'शूल' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: फूल

---

3. 'कल्पना' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: यथार्थ

---

4. 'दुःख' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सुख

---

5. 'आकाश' का विलोम _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: पाताल

---

birlaeducation.org

6. 'नभ' का पर्यायवाची _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: आकाश

---

7. 'धरती' का पर्यायवाची _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: पृथ्वी

---

8. 'प्र' उपसर्ग से बना शब्द _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: प्रगति

---

9. 'वि' उपसर्ग से बना शब्द _____ है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: विपथ

---

10. कवि लोगों को _____ की नींद से जगाने आया है। अतिरिक्त

उत्तर: आलस्य और अकर्मण्यता

समूह C: सत्य / असत्य, 10 प्रश्न

1. कवि कल्पना के हवाई महल बनाने वालों को जगाना चाहता है। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

---

2. कवि लोगों को अस्ताचल की ओर ले जाना चाहता है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

---

3. शूल दुःख का प्रतीक है। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

---

4. फूल सुख का प्रतीक है। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

---

5. सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1905 में हुआ था। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

---

birlaeducation.org

6. उदयाचल पश्चिम दिशा का पर्वत है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

---

7. कवि मँझधार में लोगों को पतवार लेकर पार लगाना चाहता है। अतिरिक्त

उत्तर: सत्य

---

8. कवि मन की संकीर्णताओं को बनाए रखना चाहता है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

---

9. 'सिन्धु' का अर्थ सागर है। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सत्य

---

10. कवि लोगों को कर्महीन बने रहने की प्रेरणा देता है। अतिरिक्त

उत्तर: असत्य

समूह D: लघु उत्तरीय प्रश्न (SAQ), 20 प्रश्न

उत्तर 3 से 5 पंक्तियों में लिखिए।

1. 'उदयाचल' और 'अस्ताचल' शब्दों का क्या अर्थ है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: उदयाचल का अर्थ है, पूर्व दिशा में स्थित वह काल्पनिक पर्वत जहाँ से सूर्य उदित होता है। यह जीवन में प्रगति का प्रतीक है। अस्ताचल का अर्थ है, पश्चिम का वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना माना जाता है।

---

2. 'विपथ' होने का आशय क्या है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: यह उनके लिए कहा गया है जो अज्ञान और अकर्मण्यता के कारण सच्चे रास्ते को छोड़कर पथभ्रष्ट बन जाते हैं और अपने लक्ष्य पथ से भटक जाते हैं।

---

3. 'कल्पना में उड़ने' से कवि का क्या तात्पर्य है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कल्पना में उड़ने से तात्पर्य है, कल्पना के हवाई महल बनाना, मन में ऊँची ऊँची कल्पनाएँ करना और मन में करोड़ों की संपत्ति जोड़ना। ऐसे लोग कर्मठ बनकर कार्य सिद्ध करने की चेष्टा नहीं करते, केवल बड़ी बड़ी बातें किया करते हैं।

---

4. मँझधार में कवि किसको और कैसे पार लगाएगा? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: जो लोग मँझधार को देखकर घबड़ा जाते हैं, उन्हें कवि पार लगाना चाहता है। वह उन्हें सहारा दे रहा है कि पतवार लेकर घबड़ाएँ नहीं। वह उन्हें तट पर थकने नहीं देगा, उन्हें पार लगाने की चेष्टा करेगा।

biharboardeducation.org

---

5. सोहनलाल द्विवेदी के जन्म का समय लिखें। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1905 में हुआ था।

---

6. कवि किसे जगा रहा है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि उन लोगों को जगा रहा है जो वास्तविक स्थितियों से मुँह मोड़कर कल्पनाओं की दुनिया में जीते हैं और आलस्य की नींद में सोए हैं।

---

7. 'प्रगति के पथ' से कवि का क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

उत्तर: प्रगति के पथ से तात्पर्य है, उन्नति और विकास का रास्ता, जिस पर चलकर मनुष्य आगे बढ़ता है और जीवन में सफल होता है।

---

8. शूल को फूल बनाने का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: शूल को फूल बनाने का अर्थ है, दुःख को सुख में बदल देना। कवि कठिनाइयों और पीड़ा को प्रयत्न और परिश्रम से आनंद में बदलना चाहता है।

---

9. मँझधार किसका प्रतीक है? अतिरिक्त

उत्तर: मँझधार जीवन की कठिनाइयों और विपत्तियों का प्रतीक है, जिन्हें देखकर मनुष्य घबड़ा जाता है।

---

10. पतवार किसका प्रतीक है? अतिरिक्त

उत्तर: पतवार साहस, धैर्य और प्रयत्न का प्रतीक है, जिसके सहारे मनुष्य कठिनाइयों की धारा को पार कर सकता है।

---

11. कवि लोगों को धरती पर निगाह रखने को क्यों कहता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि चाहता है कि लोग आकाश में उड़ने की कल्पना छोड़कर धरती के वास्तविक जीवन को देखें और वास्तविक धरातल पर जिएँ।

---

12. 'गुरु भार' का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: गुरु भार का अर्थ है, बड़ा उत्तरदायित्व, जिसे वहन करने से मन और आत्मा को संतुष्टि मिलती है, दुःख नहीं होता।

---

13. 'सपने सजाना' का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: सपने सजाने का अर्थ है, बड़ी बड़ी कल्पनाएँ करना और मन में ऊँचे ऊँचे महल बनाना, बिना कर्म किए सुख की आशा करना।

---

14. कवि किन बंधनों को तोड़ने की बात करता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि मन की संकीर्णताओं, सामाजिक बंधनों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों की श्रृंखलाओं को तोड़ने की बात करता है।

birlaeducation.org

---

15. हीन ग्रंथि से क्या तात्पर्य है? अतिरिक्त

उत्तर: हीन ग्रंथि से तात्पर्य है, मन में अपने को छोटा और कमजोर समझने की भावना, जो मनुष्य को प्रगति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ने देती।

---

16. कवि के अनुसार सच्चा सुख किसमें मिलता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि के अनुसार सच्चा सुख कठिन कार्य के निर्वाह और उत्तरदायित्व को निभाने में मिलता है, बड़ी बड़ी कल्पनाएँ करने में नहीं।

---

17. कवि लोगों को सजग और सावधान क्यों बनाना चाहता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि चाहता है कि लोग अज्ञान की नींद छोड़कर सजग और सावधान बनें, ताकि वे कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ सकें और प्रगति कर सकें।

---

18. लोगों के उठने से धरती और आकाश का सिर उठने का क्या भाव है? अतिरिक्त

उत्तर: इसका भाव है कि जब मनुष्य उन्नति के शिखर पर पहुँचता है, तो सारी पृथ्वी और सारा आकाश उठकर उसका स्वागत करता है।

---

19. कविता में 'बूँद नहीं, समुद्र बनने' का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: इसका अर्थ है कि मनुष्य को क्षुद्र और तुच्छ भावना छोड़कर उदार और विशाल हृदय वाला बनना चाहिए।

20. कविता की मुख्य प्रेरणा एक पंक्ति में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता की मुख्य प्रेरणा है कि मनुष्य आलस्य और कल्पना को छोड़कर साहसी, कर्त्तव्य परायण और कर्मशील बने।

समूह E: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ), 20 प्रश्न

उत्तर विस्तार से लिखिए।

1. प्रस्तुत कविता में कवि किसे जगा रहा है तथा उन्हें क्या हिदायतें दे रहा है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि उन लोगों को जगा रहा है जो वास्तविक स्थितियों से मुँह मोड़कर कल्पनाओं की दुनिया में जीते हैं। वह उन्हें हिदायत दे रहा है कि अब कल्पना करना छोड़कर वास्तविक जीवन जीने का प्रयास करें, अपने को पतन की ओर नहीं, प्रगति की ओर ले जाएँ, प्रयत्न करने से पीछे न हटें, आकाश छोड़कर धरती पर अपनी निगाह रखें, कर्मठ और कर्त्तव्य परायण बनें, अज्ञान की नींद छोड़कर सजग और सावधान बनें।

2. मानव मन की किन संकीर्णताओं का वर्णन पाठ में हुआ है? उनका वर्णन करें। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि ने मानव मन की अनेक संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है। आज लोगों के मन में जाति, धर्म, संप्रदाय और अमीर गरीब को लेकर संकीर्णताएँ बनी हुई हैं। लोगों में हीन ग्रंथि बनी हुई है। उनके मन को नाना प्रकार के सामाजिक बंधन, रूढ़ियाँ और अंधविश्वास जकड़ रखे हैं। जब तक मन में साहस और शक्ति का संचार नहीं होगा और आत्मबल नहीं बढ़ेगा, तब तक वह प्रगति मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता।

biharboardeducation.org

3. कवि लोगों को क्या करने और क्या न करने का संदेश दे रहा है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि लोगों को यह संदेश दे रहा है कि वे सजग और सावधान होकर कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ें, कल्पना लोक में विचरना बंद कर वास्तविक जगत् में रहें, मन में केवल ऊँची ऊँची कल्पनाएँ न करें, वास्तविक जीवन के बारे में सोचें, धरती के प्राणी बनें, कठिन कार्य के निर्वाह में सच्चा सुख पाएँ, प्रतिकूल स्थिति और रास्ते की कठिनाइयों को देखकर विचलित न हों, और मन की संकीर्ण रूढ़ियों के बंधन को तोड़कर उदारवादी तथा मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाएँ।

4. 'प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: इस पंक्ति में कवि कह रहा है कि वह लोगों को प्रगति की ओर ले जाने के लिए प्रस्तुत है। वह लोगों के मन में शक्ति और साहस का संचार कर रहा है और प्रेरित कर रहा है कि वे आलस्य और अकर्मण्यता छोड़कर कर्त्तव्य परायण बनें, कल्पना करना छोड़कर वास्तविक धरातल पर जिएँ, पथभ्रष्ट न बनें, सच्चे रास्ते का परित्याग न करें और मन में कभी हीन भावना न लाएँ। तभी निश्चित रूप से वे जीवन में उन्नति करेंगे और प्रगति की ओर बढ़ेंगे।

5. 'शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक, फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।' भाव स्पष्ट कीजिए। पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि लोगों को आश्वस्त कर रहा है कि जिसे वे काँटा समझ रहे हैं, उसे वे फूल बनाने के लिए प्रस्तुत हैं। वे लोगों के दुःख को दूर कर उसे सुख के रूप में बदलना चाहते हैं। बड़ी बड़ी कल्पनाएँ करना ही सुख नहीं है, इस झूठे सुख में नहीं पड़ना

चाहिए। साहस के साथ कठिन से कठिन कर्त्तव्य का निर्वाह करना ही सच्चा सुख है। सच्चा सुख उत्तरदायित्व के निर्वाह में ही मिलता है।

---

6. प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि ने हमें क्या प्रेरणा दी है? पाठ्यपुस्तक

उत्तर: कवि ने भारतवासियों को सजग और कर्मशील बनने की प्रेरणा दी है। देशवासियों को आलस्य, निद्रा और अकर्मण्यता छोड़कर कर्मठ बनना चाहिए, पीछे न जाकर आगे बढ़ना चाहिए और सूर्योदय की भाँति दीप्यमान बनकर चारों ओर रोशनी फैलानी चाहिए। कल्पना के महल बनाना छोड़कर वास्तविक संसार में विचरण करना चाहिए। जिसे लोग काँटा अर्थात् दुःख समझते रहे, कवि उस काँटे को फूल बनाकर उनके मार्ग को प्रशस्त करना चाहता है। व्यक्ति को सारे बंधनों को तोड़कर उदारता दिखलानी चाहिए और हीन प्रवृत्ति को छोड़कर तेजस्वी बनना चाहिए। इस प्रकार कवि ने हमें साहसी, कर्त्तव्य परायण, आशावादी और प्रगतिशील बनने की प्रेरणा दी है।

---

7. कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: इस कविता में कवि आलस्य की नींद में सोए लोगों को जगाने आया है। वह कहता है कि कल्पना के हवाई महल छोड़कर वास्तविक जीवन जियो, कर्त्तव्य पथ पर बढ़ो, दुःख को सुख में बदलो, मँझधार में पतवार लेकर पार उतरो और मन की संकीर्णताओं को तोड़कर सागर की तरह विशाल बनो। जो मनुष्य प्रयत्न और परिश्रम करता है, वही जीवन में प्रगति करता है और उन्नति के शिखर पर पहुँचता है।

---

8. कल्पना में उड़ने वाले लोगों की दशा का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

birlaeducation.org

उत्तर: कल्पना में उड़ने वाले लोग मन में ऊँची ऊँची कल्पनाएँ करते हैं और करोड़ों की संपत्ति जोड़ते हैं, पर कर्मठ बनकर कार्य सिद्ध करने की चेष्टा नहीं करते। वे केवल बड़ी बड़ी बातें करते हैं और प्रयत्न व परिश्रम से मुँह मोड़ते हैं। ऐसे लोग वास्तविक जीवन से दूर रहते हैं और कल्पना के मोदक से तन मन को संतुष्ट करना चाहते हैं, जो कभी संभव नहीं होता।

---

9. कवि के अनुसार मनुष्य को प्रगति के मार्ग पर कौन सी बाधाएँ रोकती हैं? अतिरिक्त

उत्तर: मनुष्य को प्रगति के मार्ग पर आलस्य, अकर्मण्यता, अज्ञान, हीन भावना, जाति धर्म और संप्रदाय की संकीर्णताएँ, सामाजिक बंधन, रूढ़ियाँ और अंधविश्वास रोकते हैं। जब तक मनुष्य इन बंधनों को तोड़कर साहस और आत्मबल नहीं जगाता, तब तक वह प्रगति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता।

---

10. मँझधार प्रसंग से कवि क्या समझाना चाहता है? अतिरिक्त

उत्तर: मँझधार जीवन की कठिनाइयों का प्रतीक है। कवि कहता है कि जो लोग मँझधार को देखकर घबड़ा जाते हैं, उन्हें वह पतवार लेकर पार लगाना चाहता है। वीर पुरुष सामने की कठिनाई को देखकर घबड़ाता नहीं, वह पतवार लेकर तेज धारा की ओर बढ़ता है और तट पर थके बिना पार उतरने के लिए तत्पर रहता है।

---

11. कवि लोगों को उदयाचल की ओर क्यों ले जाना चाहता है? अतिरिक्त

उत्तर: उदयाचल पूर्व दिशा का वह पर्वत है जहाँ से सूर्य उदित होता है, इसलिए वह प्रगति और उन्नति का प्रतीक है। कवि लोगों को अस्ताचल अर्थात् पतन की ओर नहीं, उदयाचल अर्थात् प्रगति की ओर ले जाना चाहता है, ताकि वे सूर्योदय की भाँति दीप्यमान बनकर चारों ओर रोशनी फैलाएँ।

---

12. कविता में प्रयुक्त शूल और फूल प्रतीकों का भाव स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: शूल काँटे का प्रतीक है और फूल सुख का प्रतीक है। कवि कहता है कि जिसे लोग अभी तक शूल अर्थात् दुःख समझते रहे, उसे वह फूल अर्थात् सुख बना देगा। यदि मनुष्य प्रयत्न और परिश्रम का सदुपयोग करे, तो वह पीड़ा को आनंद में बदल सकता है।

---

13. कविता आज के जीवन में क्यों प्रासंगिक है? अतिरिक्त

उत्तर: आज भी बहुत से लोग केवल सपने देखते हैं और कर्म नहीं करते, जाति धर्म की संकीर्णताओं में बँधे रहते हैं और कठिनाइयों से घबड़ाते हैं। यह कविता उन्हें जगाती है कि वे आलस्य छोड़कर कर्मशील बनें, संकीर्णता तोड़कर उदार बनें और कठिनाइयों का साहस से सामना करें। इसलिए यह कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

---

14. कर्त्तव्य परायणता का महत्त्व कविता के आधार पर समझाइए। अतिरिक्त

उत्तर: कवि के अनुसार कर्त्तव्य परायण बनना ही जीवन की सच्ची सफलता है। कठिन कार्य के निर्वाह में सच्चा सुख मिलता है और उत्तरदायित्व वहन करने से मन और आत्मा को संतुष्टि मिलती है। जो मनुष्य कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहता है, वह कभी पथभ्रष्ट नहीं होता और प्रगति के शिखर पर पहुँचता है।

---

15. कवि लोगों को समुद्र बनने की प्रेरणा क्यों देता है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि चाहता है कि मनुष्य बूँद की तरह क्षुद्र और तुच्छ न रहे, बल्कि समुद्र की तरह विशाल और उदार बने। समुद्र बनने का अर्थ है, मन की संकीर्णता और हीन भावना छोड़कर सभी के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाना और बड़े हृदय से जीना।

birlaeducation.org

---

16. कविता में कवि ने किन किन भावों को जगाने का प्रयत्न किया है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि ने लोगों में साहस, शक्ति, आत्मबल, कर्मठता, कर्त्तव्य परायणता, आशा और उदारता के भाव जगाने का प्रयत्न किया है। वह चाहता है कि लोग अज्ञान की नींद छोड़कर सजग बनें, कल्पना छोड़कर वास्तविक जीवन जिएँ और प्रगति के पथ पर बढ़ें।

---

17. आलस्य त्यागने की प्रेरणा कविता में कैसे दी गई है? अतिरिक्त

उत्तर: कवि आलस्य और अकर्मण्यता की नींद में सोए लोगों को जगाने आया है। वह कहता है कि अब कर्महीन और निश्चेष्ट रहकर प्रयत्न और परिश्रम से मुँह मोड़ने का समय नहीं है। आकाश में उड़ने की कल्पना त्यागकर धरती पर रहकर वास्तविक जीवन की बात करो और कर्मठ बनकर आगे बढ़ो।

---

18. कविता की भाषा और शैली पर टिप्पणी लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता की भाषा सरल और प्रभावशाली हिंदी है। इसमें उदयाचल, अस्ताचल, शूल, फूल, मँझधार, पतवार और सिन्धु जैसे प्रतीकों का सुंदर प्रयोग हुआ है। कवि सीधे लोगों को संबोधित करके जगाने का भाव जगाता है, जिससे कविता में ओज और प्रेरणा का भाव आ गया है।

---

19. कवि के अनुसार मनुष्य उन्नति के शिखर पर कैसे पहुँच सकता है? अतिरिक्त

उत्तर: मनुष्य उन्नति के शिखर पर तभी पहुँच सकता है जब वह आलस्य छोड़कर कर्मठ बने, कल्पना छोड़कर वास्तविक जीवन जिए, कठिनाइयों से न घबड़ाए, मन की संकीर्णताओं को तोड़े, उदार बने और कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ता से आगे बढ़े। उसके गतिशील होने पर सारी पृथ्वी और सारा आकाश उठकर उसका स्वागत करेगा।

---

20. कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए। अतिरिक्त

उत्तर: कविता का केंद्रीय भाव जागरण और कर्म की प्रेरणा है। कवि सोए हुए लोगों को जगाकर कहता है कि कल्पना के हवाई महल छोड़ो, वास्तविक जीवन जियो, दु:ख को सुख में बदलो, कठिनाइयों से लड़ो और उदार बनकर प्रगति के पथ पर बढ़ो। यही मनुष्य के जीवन की सच्ची सफलता है।

---

birlaeducation.org